स्टैच्यू ऑफ यूनिटी - राजनैतिक विरासत की जंग

बसंत रावत

यदि आज अचानक कोई भाजपा का शीर्ष नेता कांग्रेस के बढ़े नेता की शान में कसीदे पढ़ने लगे तो आप क्या कहेंगे? यही न कि दाल में कुछ काला है। कुछ-कुछ यही हाल है सरदार पटेल की प्रतिमा का। कुछ इसी तरह की कहानी है। प्रतिमा से ज्यादा प्रतिमा बनवाने वाले राजनैतिक रणनीतिकार के छिपे मंसूबों के उजागर होने की कहानी।

और इसी लिए "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" के स्वप्नद्रष्टा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब आजाद भारत के पहले उप प्रधानमंत्री लौह पुरुष के नाम से विख्यात, सरदार वल्लभ भाई पटेल की सादगी भरे जीवन के ठीक उलट उनकी बहुचर्चित 597 फुट ऊंची भव्य प्रतिमा का 31 अक्टूबर को अनावरण करेंगे, तो इसके साथ ही कई अनुत्तरित सवाल छोड़ कर जायेंगे गुजरात से ।

कमाल की बात तो ये है इन सवालों के जवाब बुतपरस्त भजपाइयों के सिवा हर कोई पहले से ही जानता है। कम से कम गुजरात में तो लोग जानने लगे हैं, पूरे देश की बात फिलहाल छोड़ भी दें तो। हां, कांग्रेसियों की बात अलग है- जान कर भी अनजान बनना शायद उनकी कोई राजनैतिक मजबूरी होगी।

वैसे गुजरात में सब मानते हैं कि सरदार पटेल ही महात्मा गांधी के बाद सबसे बड़े आइकॉन हैं। सिर्फ पाटीदार कम्युनिटी के ही नहीं। मोदी के सरदार पटेल एक राजनैतिक औजार भर हैं। सरदार के विचारों से भले ही कोई वास्ता न हो, खुद को उनके विचारों का वंशज बनाने की जुगत में हैं। एक समय जब अपने को छोटे सरदार कहलाने का भूत सवार था।

मोदी के कभी करीबी रहे लोग कहते हैं कि प्रतिमा बना कर मोदी असल में सरदार के विचारों को ऊंचा नहीं दिखा रहे हैं। बल्कि लौह प्रतिमा स्थापित कर सरदार को एक "शो पीस" बना रहे हैं।

प्रतिमा के स्वप्नद्रष्टा इस बहाने, खासकर विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा बना कर, अपना भी कद ऊंचा करना चाहते हैं। और फिर सबसे ऊंची प्रतिमा के निर्माता के तौर पर खुद को अमर कर देना चाहते हैं।

यानि सरदार पटेल के विचोरों की प्रासांगिकता से स्टैच्यू का कतई कोई लेना देना नहीं है। अगर होता तो शायद 3000 करोड़ की लागत से बनने वाली, चीन निर्मित प्रतिमा स्थापित ही नहीं की जाती। इलाके के गरीब आदिवासियों को विस्थापित कर, स्टैच्यू का प्रोजेक्ट नहीं बनता।

आदिवासियों के विरोध के बावजूद लौह पुरुष की लौह प्रतिमा का अनावरण करने वाले के इरादे भी जरूर फौलादी होंगे। वरना जनमत की परवाह करने वाला एक निर्वाचित नेता इतनी हिम्मत कैसे जुटा पाता।

सरदार पटेल को बारदोली सत्याग्रह के बाद महिलाओं ने "सरदार" की उपाधि दी थी और 565 रियासतों का भारत में विलय कराने के लिए उन्हें लौह पुरुष का खिताब मिला ।

प्रधानमंत्री मोदी ने सरदार के प्रति अपनी आस्था और भक्ति को राजनैतिक रंग देकर लौह प्रतिमा के जरिये कांग्रेस से अपने वैचारिक युद्ध को एक नया आयाम दे दिया है। ये युद्ध उन्होंने मुख्यमंत्री रहते शुरू कर दिया था। अपनी पूरी शक्ति लगा कर कांग्रेस की खासकर नेहरू के वंशजों के खिलाफ सरदार पटेल को खड़ा कर, फजीहत करने की कोशिश की। कुछ हद तक कामयाबी मिली भी। पर सवाल अपनी जगह खड़े हैं जवाब पाने के लिए।

सवाल सरदार पटेल की प्रासंगिकता का बिल्कुल नहीं है। सरदार अन्य आइकॉन्स जितना ही रेलिवेंट हैं। अखंड भारत, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक समता, सामाजिक सद्भावना, गरीब-किसानों के प्रति विशेष लगाव- ये जीवन मूल्य उन्हें कॉर्पोरेट प्रेमी मोदी से अलग करते हैं । जब जातिवाद, साम्प्रदायिकता और प्रांतवाद रहेगा, सरदार पटेल इन सामाजिक बुराइयों के घटाटोप अंधेरे को चीरते हुए रोशनी की तरह चमकते रहेंगे। इस विवादास्पद प्रतिमा की जगमगाहट के बिना भी।

रात में प्रतिमा पर पड़ने वाली रोशनी की जगमगाहट से केवड़िया, नर्मदा डैम के निचले भाग में, वन्य प्राणियों को त्रास तो झेलना ही पड़ेगा, आस-पास के दर्जनों आदिवासी गांव भी बेहद खफा हैं। नहीं, सरदार पटेल से नहीं, उनकी प्रतिमा की वजह से, सेंसटिव इको जोन की परवाह किये बिना। उन्हें बेदखल होना पड़ा, इस लिये। एक विस्थापित का जीवन जीने के लिये मजबूर होने के कारण।

यही एक बजह है कि आदिवासी विरोध कर रहे हैं स्टैच्यू का। उन्होंने ऐलान किया है कि 31 अक्टूबर को खाना नही पकाएंगे। काला दिवस मनाएंगे।

सरदार पटेल जो कि गरीब और हासिये पर खड़े लोगों के बेपनाह हिमायती थे, वे शायद अपनी इतनी बढ़ी प्रतिमा बनाने की कभी इजाजत नहीं देते जिससे इतने आदिवासियों को प्रभावित होना पड़े।

खैर, आदिवासियों के लिये सरकार के पास विकास का झुनझुना है। पर्यटन, रोजगार के अवसर जैसे रंगीन सपने हैं। कुछ विकास के आंकड़े भी दिए जांएंगे चबाने और पचाने के लिये। शायद उस दिन से कोई नया जुमला भी तैरने लगे फिजाओ में। बहिष्कार को सुअवसर में बदलने की मनमोहक बात भी की जा सकती है, हमेशा की तरह।

और एक स्वाभाविक प्रश्न भी पूछा जा सकता है मोदी जी से कि आखिर वे सरदार पटेल को, जो कि एक कांग्रेसी थे, इतना महिमा मंडित क्यों कर रहे हैं? सरदार पटेल ने तो मोदी की मातृ संस्था आरअसएस पर गांधी जी की हत्या के बाद प्रतिबंध तक लगाया था।

सवाल और भी हैं। मसलन जिस कांग्रेस मुक्त भारत की कल्पना के चलते मोदी जी ने कांग्रेस मुक्त भारत का क्रांतिकारी नारा दिया, सरदार पटेल उस पार्टी के रास्ट्रीय अध्यक्ष थे और 26 सालों तक वो गुजरात कांग्रेस के प्रेसिडेंट रहे।

तो फिर अपने विचारधारा के आइकॉन का महिमा मंडन के बजाय एक प्रखर कांग्रेसी नेता को क्यों चुना मोदी ने जो कि एक कमिटेड गांधीवादी थे जिनका संघ परिवार की विचारधारा से घोर विरोध था।

असल में मोदी का सरदार पटेल की विचारधारा से कोई लेना देना नहीं है। और न ही कोई लगाव है। उनका एक मात्र मकसद है पाटीदार कम्युनिटी के सबसे बड़े नेता को ग्लोरिफायी करना। यह मोदी की जातिवादी राजनीति के तहत एक सोची समझी रणनीति है। पाटीदार गुजरात में एक पावरफुल कम्युनिटी। साम्प्रदायिक राजनीति से आगे जाकर जातीय सिम्बोलिज्म की राजनीति के तहत सरदार की प्रतिमा। असली मुद्दों से हटकर, नेहरू के सामने एक गुजराती प्राइड से जोड़ते हुए देखना।

प्रोफेसर गौरांग जानी का मानना है कि सरदार भले ही एक कद्दावर पाटीदार नेता थे, मूलत: स्वभाव से वे एक सादगी पसंद किसान थे जिनका जन्म नाडियाड में हुआ था। अब सवाल ये है नडियाद, खेड़ा और चरोतर पाटीदार बेल्ट में सरदार की प्रतिमा को स्थापित न कर नर्मदा जिले में क्यों किया ?

कारण साफ है वह किसानों की जमीन का अधिग्रहण नहीं कर सकते थे। पाटीदार अपनी उपजाऊ जमीन कभी नहीं देते। हर सूरत में गरीब आदिवासी को ही तथाकथित विकास लक्ष्यी प्रोजेक्ट के लिये कुर्बानी देनी पड़ती है जो कि एक तरह से सरदार के उसूलों की बिल्कुल विरुद्ध है।

इस लिहाज से विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा का अनावरण करना मोदी की चिर परिचित चकाचौंध की राजनीति का एक नमूना भर है। इसे इसी तरह देखा जाना चाहिए। सेलिब्रेशन, लाइट एंड साउंड एंड इवेंट मैनेजमेंट की राजनीति। सरदार के आदर्शों, विचारों से मूर्ति का कतई कोई वास्ता नहीं। प्रतिमा का अगर किसी से वास्ता है तो स्वयं मोदी से है जिसने दुनिया की सबसे बढ़ी प्रतिमा बनवाई, लगवाई। और इस तरह कांग्रेस के नेता का कांग्रेस के खिलाफ इस्तेमाल कर मोदी कांग्रेस की राजनैतिक विरासत को छल से हड़पने की कोशिश करते दिखते हैं। चौदह प्रतिशत पाटीदारों को रिझाने के चक्कर में 15 प्रतिशत आदिवासियों और 30 फीसदी सवर्णों को खफा कर दिया। प्रतिमा के अनावरण से पहले गुजरात में बीजेपी द्वारा प्रायोजित एकता यात्रा की विफलता इसका सबूत है।

(बसंत रावत टेलीग्राफ के अहमदाबाद के ब्यूरो चीफ रहे हैं।)

इसे प्रायश्चित कहूँ या पाखंड ?

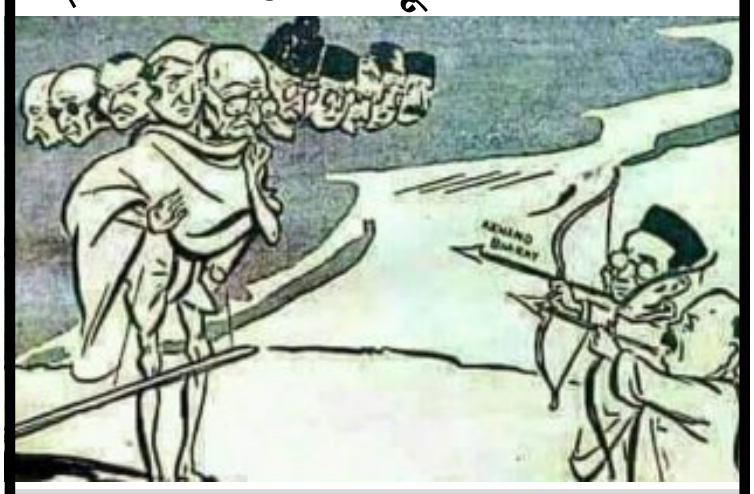

कभी डॉ हेडगेवार और गुरु गोलवलकर से जुड़ा भी कोई उत्सव मना लिया कीजिये। नयी पीढ़ी भी इनके योगदान को जानना चाहती है। ये भी सार्वजनिक जीवन मे रहे हैं। इन्होंने भी देश और समाज के बेहतरी के बारे में कुछ न कुछ तो सोचा होगा। जो कर सकते थे, किया भी होगा। गोलवलकर को तो मैंने भी देखा है । बनारस में बेनियाबाग के मैदान में 1971 में उन्हें सुना भी था। कम से कम उनके लेखों और विचारों से भी तो लोग वाकिफ हों। इनके बारे में चुप्पी और यह नजरअंदाजी भी अक्सर सोशल मिडिया पर दिखती है । वैचारिक मतभेदों के बाद भी लोगों को उनके बारे में उत्कंठा रहती है। यह उत्कंठा मुझे भी है।

मेरे संघी मित्र जिनकी संख्या वास्तविक जीवन मे कम भी नहीं है गांधी नेहरू को बुरा भला तो कहते रहते हैं, पर वे हेडगेवार और गुरु गोलवलकर के बारे में बहुत कुछ नहीं कहते हैं । शायद वे भी उनके बारे में अधिक नहीं जानते या उनके एजेंडे में गांधी नेहरू की आलोचना करना ही ही प्रमुख विंदु बताया गया है। संघ के संथापक कैसा भारत चाहते थे ? वे जनता में लोकप्रिय क्यों नहीं पाए ? गांधी नेहरू संघ के ही विचारों के अनुसार कुटिल और अव्याश होने के बावजूद भी जनता में इतने लोकप्रिय कैसे बने रहे? आदि आदि सवाल तो आप के मन मे भी उठते होंगे। गांधी नेहरू तो आप की नज़रों में नालायक थे पर इन लायक महानुभाओं पर भी तो कोई जश्न मने।

अब आप यह कार्टून देखिये। आपने इसे पहले भी देखा होगा। रावण के रूप में चित्रित गांधी के दसों चेहरों को देखिए, इनमें एक सिर सरदार पटेल का भी है। आज उन्ही सरदार पटेल की 182 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण संघ परम्परा के मानस पुत्र द्वारा किया गया है। रावण के जिस शीश पर श्यामा प्रसाद मुखर्जी, सावरकर शर संधान कर रहे हैं उनमें से एक शीश पटेल का भी है। कितना पाखंड भरा है मित्रों।

1946 में जब देश को एकता की ज़रूरत थी तो सभी अपनी अपनी तरफ रस्सी खींच रहे थे। जब सब कुछ अप्रत्याशित घट जाय और उसकी व्याख्या असहज करने लगे तो, हम सबकुछ नियति पर टांग देते हैं। नियति पर टांग देने से तात्कालिक राहत तो ज़रूर मिल जाती है पर यह राहत जीवन भर सालती भी रहती है। काश कह कर हम जो एक लंबी श्वांस छोड़ते हैं, वह दंश ही है नियति का ! पटेल 1946 में भी महान थे और आज भी महान हैं। पर तब वे रावण के दस सिरों में से एक सिर क्यों थे और आज वे इतने पूज्य कैसे हो गए हैं ? इतिहास बदला है, या इतिहास की समझ या अंतरात्मा जागृत हुयी है पता नहीं। पर यह सवाल मेरे मन मे कौंध रहा है और मैं चाहूंगा कि आप भी इस सवाल से रूबरू हों । आज यह मूर्ति अनावरण कहीं इस पाप का प्रायश्चित तो नहीं जो उनके अनुयायियों द्वारा किया गया है।

- विजय शंकर सिंह

मोदी जी इस पत्र का भी वाचन करना!
देश की एकता कौन बनायेगा ?

महात्मा गांधी की हत्या के बाद आरएसएस पर 4 फरवरी 1948 को प्रतिबंध लगा दिया गया था. इस प्रतिबंध के छह महीने बाद सरदार पटेल ने संघ के संस्थापक गोलवलकर को खत लिखा था. इस खत के माध्यम से पटेल की संघ और देश की एकता के बारे में विचार जाने जा सकते हैं.

नई दिल्ली, 11 सितंबर, 1948
औरंगजेब रोड
भाई श्री गोलवलकर,

आपका खत मिला जो आपने 11 अगस्त को भेजा था. जवाहरलाल ने भी मुझे उसी दिन आपका खत भेजा था. आप राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ पर विचार भली-भांति जानते हैं. मैने अपने विचार जयपुर और लखनऊ की सभाओं में भी व्यक्त किए हैं. लोगों ने भी मेरे विचारों का स्वागत किया है. मुझे उम्मीद थी कि आपके लोग भी उनका स्वागत करेंगे, लेकिन ऐसा लगता है मानो उन्हें कोई फर्क ही न पड़ा हो और वो अपने कार्यों में भी किसी तरह का परिवर्तन नहीं कर रहें. इस बात में कोई शक नहीं है कि संघ ने हिंदू समाज की बहुत सेवा की है. जिन क्षेत्रों में मदद की आवश्यक्ता थी उन जगहों पर आपके लोग पहुंचे और श्रेष्ठ काम किया है. मुझे लगता है इस सच को स्वीकारने में किसी को भी आपत्ति नहीं होगी. लेकिन सारी समस्या तब शुरू होती है जब ये ही लोग मुसलमानों से प्रतिशोध लेने के लिए कदम उठाते हैं. उन पर हमले करते हैं. हिंदुओं की मदद करना एक बात है लेकिन गरीब, असहाय लोगों, महिलाओं और बच्चों पर हमले करना बिल्कुल असहनीय है.

इसके अलावा देश की सत्ताधारी पार्टी कांग्रेस पर आपलोग जिस तरह के हमले करते हैं उसमें आपके लोग सारी मर्यादाएं, सम्मान को ताक पर रख देते हैं. देश में एक अस्थिरता का माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है. संघ के लोगों के भाषण में सांप्रदायिकता का जहर भरा होता है. हिंदुओं की रक्षा करने के लिए नफरत फैलाने की भला क्या आवश्यक्ता है? इसी नफरत की लहर के कारण देश ने अपना पिता खो दिया. महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई. सरकार या देश की जनता में संघ के लिए सहानुभूति तक नहीं बची है. इन परिस्थितियों में सरकार के लिए संघ के खिलाफ निर्णय लेना अपरिहार्य हो गया था.

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ पर प्रतिबंध को छह महीने से ज्यादा हो चुके हैं. हमें ये उम्मीद थी कि इस दौरान संघ के लोग सही दिशा में आ जाएंगे. लेकिन जिस तरह की खबरें हमारे पास आ रही हैं उससे तो यही लगता है जैसे संघ अपनी नफरत की राजनीति से पीछे हटना ही नहीं चाहता. मैं एक बार पुन- आपसे आग्रह करूंगा कि आप मेरे जयपुर और लखनऊ में कही गई बात पर ध्यान दें. मुझे पूरी उम्मीद है कि देश को आगे बढ़ाने में आपका संगठन योगदान दे सकता है बशर्ते वह सही रास्ते पर चले .आप भी ये अवश्य समझते होंगे कि देश एक मुश्किल दौर से गुजर रहा है. इस समय देश भर के लोगों का चाहे वो किसी भी पद, जाति, स्थान या संगठन में हो उसका कर्त०?य बनता है कि वह देशहित में काम करे. इस कठिन समय में पुराने झगड़ों या दलगत राजनीति के लिए कोई स्थान नहीं है. मैं इस बात पर आश्वस्त हूं कि संघ के लोग देशहित में काम कांग्रेस के साथ मिलकर ही कर पाएंगे न कि हमसे लड़कर. मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आपको रिहा कर दिया गया है. मुझे उम्मीद है कि आप सही फैसला लेंगे. आप पर लगे प्रतिबंधों की वजह से मैं संयुक्त प्रांत सरकार के जरिए आपसे संवाद कर रहा हूं. पत्र मिलते ही उत्तर देने की कोशिश करूंगा

आपका
वल्लभ भाई पटेल

सरदार पटेल की सबसे ऊंची मूर्ति और "नकलची वृत्ति" की वैचारिक दरिद्रता

अमेरिका के "स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी" की तर्ज पर गुजरात के सरदार सरोवर बांध के पास "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" का लोकार्पण हो गया! स्थानीय आदिवासी किसान इस सरकारी परियोजना के अतिशय विस्तार और जबरन भूमि अधिग्रहण का लंबे समय से विरोध कर रहे थे। आज भी किया। स्वाधीनता आंदोलन में बारदोली के महान किसान अभियान के संगठक और नेता रहे सरदार पटेल की स्मृति सहेजने का यह कैसा प्रकल्प है!

अमेरिका में "स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी" है तो हमारे शासकों ने भी अपने इस प्रकल्प का नाम रख लिया "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी!" क्या इसमें हमारे शासकों-योजनाकारों की नकलची प्रवृत्ति नहीं दिखती? अरे भाई, कुछ मौलिक नाम रखते! देसी भाषायी-अंदाज, पटेल साहब के व्यक्तित्व के मुताबिक माटी की महक और नामकरण में कुछ धारणात्मक-मौलिकता होती! ये चीजें सिरे से गायब हैं!

दूसरी बात, इस प्रकल्प के विचार पर है! क्या वाकई "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" से भारत के लोग प्रेरित होकर ज्यादा एकजुट होंगे? क्या यह 182 मीटर ऊंची मूर्ति हमारे समाज में बढ़ते वर्णवादी भेदभाव, लिंगभेद, सांप्रदायिकता, कट्टरपंथ और सामुदायिक विद्वेष आधारित विभाजन को रोकने में सहायक होगी?

तीसरी बात कि 182 मीटर ऊंची प्रतिमा लगाकर हम समाज और दुनिया को क्या संदेश देना चाहते हैं? आज देश के सभी अखबारों और चैनलों में "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" के रंगारंग विज्ञापन छपे हैं। इसमें 182 मीटर की ऊंचाई का ऊपर ही जिक्र किया गया है। फिर नीचे नारा दिया गया है- "सबसे ऊंचे सबसे शानदार- लौह पुरुष हमारे सरदार!"

क्या इससे सरदार पटेल या भारत क्रमशः दुनिया के सभी महापुरुषों और देशों में सिरमौर या सर्वोच्च हो गये या हो जायेंगे? क्या भूख, बीमारी, असमानता, अपराध, भ्रष्टाचार, उत्पीड़क वर्णवाद और लिंगभेद के वैश्विक सूचकांक के हमारे निकृष्ट और निचले स्तर को नजरंदाज कर दुनिया इस ऊंची मूर्ति स्थापना के बाद हमें ऊंचा और श्रेष्ठ मान लेगी?

थोड़ी देर के लिए दुनिया को छोड़ दें तो क्या अपने देशवासी भी इस मूर्ति-स्थापना के बाद पहले से ज्यादा सुखी, खुश और गौरवान्वित महसूस कर सकेंगे? देश की क्या कहें, जहां यह महान् स्मारक बना है, वहां के 72 गांवों के किसान और आदिवासी इस सरकारी प्रकल्प के भूमि-विस्तार और भारी खर्च आदि के सवाल पर काफी समय से विरोध प्रकट कर रहे हैं।

मोदी।

इस परियोजना में उनकी जमीन गई है! आसपास के दर्जनों गांवों में स्कूल और अस्पताल आदि की ठीक से व्यवस्था नहीं है! स्थानीय आदिवासी-किसान अपनी बेहाली और मुश्किलों का हल चाहते हैं! क्या बेहतर नहीं होता, इस इलाके में सरदार पटेल विश्वविद्यालय, सरदार पटेल कृषि अनुसंधान केंद्र और सरदार पटेल राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान खोले गये होते?

हम आपके मूर्ति बनाने के अधिकार को चुनौती नहीं दे रहे हैं! आप शासन में हैं, आपको अधिकार है, परियोजना और प्रकल्प तैयार करने का। लेकिन सिर्फ मूर्ति ही क्यों, अपने समाज और आम नागरिकों को बेहतर और खुशहाल बनाने की परियोजना और प्रकल्प क्यों नहीं शुरू करते?

- उर्मिलेश